**Curriculum Planner**

**पाठ्यक्रम योजना (2021-22)**

**सेमेस्टर I, III, V**

**(हिन्दी विभाग, कालिन्दी महाविद्यालय)**

**Course : बी.ए (ऑनर्स) हिन्दी, तृतीय वर्ष Semester : V**

**Paper : भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच सिद्धांत Name of the Teacher: डॉ. संजय कुमार सिंह**

|  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| paper | Faculty | Work Plan | Guidelines | Approximate (schedule |
| भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच सिद्धांत | डॉ. संजय कुमार सिंह | **नाटक की विधागत विशिष्‍टता, नाट्यतत्‍व (भारतीय एवं पाश्‍चात्‍य), नाटक और रंगमंच का अंत:संबंध** | पश्चिमी नाटकों का उदय,पश्चिमी रंगमंच का उदभव,पश्चिम के नाट्यभेदों पर विस्तृत चर्चा, त्रासदी का महत्व,इनका वर्तमान रूप के विषय में पढ़ाते हुए इन विषयों के समनुदेशन तैयार करवाते हुए साप्ताहिक कक्षा परीक्षा लेना और सेमेस्टर परीक्षा की तैयारी करवाना | | अगस्त |
|  |  | **दृश्‍य और श्रव्‍य तत्‍वों का समायोजन तथा नाट्यानुभूति और रंगानुभूति** | पश्चिमी नाटकों का उदय,पश्चिमी रंगमंच का उदभव,पश्चिम के नाट्यभेदों पर विस्तृत चर्चा ,त्रासदी का महत्व,इनका वर्तमान रूप के विषय में पढ़ाते हुए इन विषयों के समनुदेशन तैयार करवाते हुए साप्ताहिक कक्षा परीक्षा लेना और सेमेस्टर परीक्षा की तैयारी करवाना | | सितम्बर |
|  |  | **रंगकर्म : नाटककार, निर्देशक, अभिनेता, पार्श्‍वकर्म** | भारतीय प्राचीन और आधुनिक नाट्यभेदों के सैद्धांतिक रूपकी जानकारी देते हुए इन भेदों के मध्य अंतर और आधुनिक रूपों की उपयोगिता पर चर्चा करते हुए साप्ताहिक कक्षा परीक्षा लेनी है और सेमेस्टर परीक्षा में ज्ञात विद्यार्थियों की कमियों को दूर किया जाएगा | | अक्‍टूबर |
|  |  | **नाटक के संदर्भ में भरतमुनि के रस-सिद्धांत एवं अरस्‍तू के विरेचन सिद्धांत का विशिष्‍ट अध्‍ययन** | भारतीय प्राचीन और आधुनिक नाट्यभेदों के सैद्धांतिक रूपकी जानकारी देते हुए इन भेदों के मध्य अंतर और आधुनिक रूपों की उपयोगिता पर चर्चा करते हुए साप्ताहिक कक्षा परीक्षा लेनी है और सेमेस्टर परीक्षा में ज्ञात विद्यार्थियों की कमियों को दूर किया जाएगा | | नवम्बर |

**प्रमुख अध्धयन सामग्री :**

रंगमंच: बलवंत गार्गी

रंगमंच: कला और दृष्टि : गोविन्द चातक

रंगमंच देखना और जानना :लक्ष्मीनारायण लाल

रंगमंच: शैल्डन चैनी

रंगदर्शन; नेमीचंद जैन

रंगकर्म :वीरेंद्र नारायण

भरत और भारतीय नाट्यकला: सुरेन्द्रनाथ दीक्षित